

कार्यशील पूँजी का वित्तपोषण (FINANCING OF WORKING CAPITAL)

10.26 परिचय (Introduction)

आवश्यक कार्यशील पूँजी की राशि निर्धारित करने के बाद, वित्त प्रबन्धक द्वारा उठाए जाने वाला अग्रिम कदम धन की व्यवस्था करना है।

जैसे कि पहले चर्चा की गई, यह सलाह दी जाती है कि वित्त प्रबंधक कार्यशील पूँजी और अस्थायी कार्यशील पूँजी के बीच कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं को विभाजित करता है।

बिक्री में उतार चढ़ाव के बावजूद स्थायी कार्यशील पूँजी की हमेशा जरूरत होती है, इसलिए दीर्घकालिक स्रोतों जैसे कि ऋण और इक्विटी द्वारा वित्तपोषित किया जाना चाहिए। इसके विपरीत अस्थायी कार्यशील पूँजी वित्त के अल्पकालिक स्रोतों द्वारा वित्तपोषित हो सकती है।

व्यापक रूप से बोलते हुए, कार्यशील पूँजी को दो श्रेणियों के बीच वर्गीकृत किया जा सकता है :

- (i) स्वायत्त स्रोत: तथा
- (ii) परक्राम्य स्रोत

स्वायत्त स्रोत (Spontaneous Sources) : वित्त के स्वायत्त स्रोत वे हैं जो स्वाभाविक रूप से व्यापारिक परिचालन के दौरान उत्पन्न होते हैं। व्यापार ऋण, कर्मचारियों से ऋण, सेवाओं के आपूर्तिकर्ताओं से ऋण आदि कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनको इस सम्बन्ध में उद्धृत किया जा सकता है।

परक्राम्य स्रोत (Negotiated Sources) : दूसरी तरफ, परक्राम्य स्रोत, के नाम के रूप में, जो कि विशेष रूप से उधारकर्ताओं, वाणिज्यिक बैंकों, वित्तीय संस्थानों, आम जनता आदि के साथ परक्राम्य के लिए हैं।

एक विशिष्ट स्रोत का कार्यशील पूँजी के वित्तपोषण के लिए संयोजन का चयन करते समय वित्त प्रबंधक को बहुत सावधान रहना होगा। सामान्यतया, निम्नलिखित मानदण्ड इस सम्बन्ध में अपने फैसले का मार्गदर्शन करेंगे :

- (i) लागत कारक
- (ii) क्रेडिट रेटिंग पर प्रभाव
- (iii) व्यवहार्यता
- (iv) विश्वसनीयता
- (v) प्रतिबन्ध

(vi) हेजिंग दृष्टिकोण या मिलान करने का तरीका यानी, सम्पत्ति के रूप में समान परिपक्वता के साथ परिसम्पत्तियों का वित्तपोषण।

10.27 वित्त के स्रोत [Sources of Finance]**10.27.1 वित्त के स्वायत्त स्रोत (Spontaneous Sources of Finance)**

(क) व्यापार ऋण (Trade Credit) : जैसा कि ऊपर उल्लिखित है व्यापार ऋण वित्त का एक स्वायत्त स्रोत है जो आमतौर पर विक्रेताओं या सेवाओं के प्रदाताओं द्वारा खरीदार संगठन को बढ़ाया जाता है। कामकाजी पूँजी के वित्तपोषण का यह स्रोत अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे कुल लघुकालीन आवश्यकताओं में से एक तिहाई योगदान होता है। अन्य स्रोतों की तुलना में वित्त की कम लागत के कारण इस स्रोत पर निर्भरता अधिक है। जब एक कम्पनी आपूर्ति, माल या सामग्रियों का अधिग्रहण करता है और तुरन्त भुगतान नहीं करता, तो व्यापार ऋण की गारंटी होती है। यदि कोई खरीदार ज्यादा औपचारिकता को पूरा किए बिना ऋण प्राप्त कर सकता है, तो इसे 'ओपन अकाउंट व्यापार ऋण' कहा जाता है।

(ख) देय बिल (Bills Payable) : "देय बिलों" के मामले में दूसरी तरफ, क्रेता को नोट के वाहक या विक्रेता को माँग पर या एक निश्चित भविष्य की तारीख में बिल या चालान की राशि का भुगतान करने के लिए एक लिखित वादा देना होगा। इसकी सादगी, आसान उपलब्धता और कम स्पष्ट लागत के कारण, इस स्रोत पर निर्भरता सभी छोटे या बड़े संगठनों में अधिक है। विशेष रूप से, छोटे उद्यमों के लिए इस प्रकार के क्रेडिट छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए अधिक उपयोगी होते हैं। ऐसे वित्तपोषण की मात्रा खरीद की मात्रा और भुगतान समय पर निर्भर करती है।

(ग) अर्जित व्यय (Accrued expenses) : लघु-अवधि के वित्तपोषण का एक और सहज स्रोत, अर्जित व्यय या बकाया व्यय देयताएँ हैं। अर्जित व्यय फर्म द्वारा उठाई गई सेवाओं का उल्लेख करते हैं, लेकिन उस भुगतान का भुगतान अभी तक करना बाकी है। यह एक अंतर्निहित और वित्त का एक स्वतन्त्र स्रोत है, क्योंकि मजदूरी, वेतन, कर, कर्तव्य आदि जैसी अधिकांश सेवाओं का भुगतान अवधि के अन्त में किया जाता है। अर्जित व्यय वित्त के ब्याज मुक्त स्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं। अर्जित व्यय के साथ कोई स्पष्ट या अप्रत्यक्ष लागत नहीं है और फर्म इन खर्चों को प्राप्त करके नकदी सुनिश्चित कर सकता है।

10.27.2 इंटर-कॉरपोरेट ऋण और जमा [Inter Corporate Loans and Deposits]—कभी-कभी, अधिशेष फंड वाले संगठन अन्य संगठनों के साथ लघुकालीन अवधि में निवेश करते हैं। ब्याज दर ब्याज की बैंक दर से अधिक होगी और उधारकर्ता कम्पनी की वित्तीय सुदृढ़ता पर निर्भर करती है। वित्त का यह स्रोत बैंक वित्तपोषण पर निर्भरता कम करता है।

10.27.3 वाणिज्यिक पत्र (Commercial Papers)—कॉमर्शियल पेपर (सीपी) एक फर्म द्वारा छोटी अवधि के लिए धन जुटाने के लिए जारी एक असुरक्षित वचन पत्र है। यह एक ऐसा साधन है जो अल्पकालिक उधार के लिए उच्च श्रेणी के कॉर्पोरेट उधारकर्ताओं को सक्षम बनाता है और निवेशकों के लिए एक अतिरिक्त वित्तीय साधन प्रदान करता है जो कि एक स्वतन्त्र रूप से परक्राम्य ब्याज दर के साथ होता है। परिपक्वता अवधि निर्गमन की तारीख से न्यूनतम 7 दिनों से 1 वर्ष से कम के बीच होती है। सीपी को ₹ 5 लाख या उसके गुणक के नाम पर जारी किया जा सकता है।

सीपी का लाभ : जारी करने वाली कम्पनी के बिन्दु से, सीपी निम्नलिखित लाभ प्रदान करता है :

- (a) सीपी को असुरक्षित आधार पर बेचा जाता है और इसमें कोई प्रतिबन्धक स्थिति नहीं होती है।
 - (b) परिपक्वता सीपी को नया सीपी बेचकर चुकाया जा सकता है और इस प्रकार धन का निरन्तर स्रोत प्रदान किया जा सकता है।
 - (c) जारी करने वाले फर्म की आवश्यकता के अनुरूप सीपी की परिपक्वता को तैयार किया जा सकता है।
 - (d) सीपी को फंड के एक स्रोत के रूप में जारी किया जा सकता है, जब भी धन बाजार तंग हो।
 - (e) सामान्यतया, जारी करने वाले फर्म को सीपी की लागत वाणिज्यिक बैंक ऋण की लागत से है। हालांकि, वित्तपोषण के स्रोत के रूप में सीपी की अपनी सीमाएँ हैं :
- (i) केवल अत्यधिक क्रेडिट रेटिंग फर्म इसका इस्तेमाल कर सकते हैं नई और मध्यम श्रेणी निर्धारण वाली फर्म सामान्यतः सीपी जारी करने की स्थिति में नहीं हैं।
 - (ii) सीपी को परिपक्वता से पहले नहीं भुनाया जा सकता है और न ही परिपक्वता से आगे बढ़ाया जा सकता है।

10.27.4 संचालन से उत्पन्न निधि (Funds Generated From Operation)

एक लेखा के अवधि के दौरान परिचालन से उत्पन्न निधि, बराबर राशि द्वारा कार्यशील पूँजी में वृद्धि करती है। परिचालन से उत्पन्न धन के दो मुख्य घटक लाभ और मूल्यह्रास हैं। परिचालन से उत्पन्न धन की सीमा तक कार्यशील पूँजी में वृद्धि होगी। छात्र इस अध्याय के पहले दिए गए निधि प्रवाह विवरण का उल्लेख कर सकते हैं।

10.27.5 सार्वजनिक जमाओं (Public Deposits)

जनता की जमाराशि वित्त के महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है, खासकर छोटे और मध्यम अवधि के लिए बड़ी पूँजी आधार वाली अच्छी और सुस्थापित बड़ी कम्पनियों के लिए।

10.27.6 बिल डिस्काउंटिंग (Bills Discounting)

बिल डिस्काउंटिंग को एक महत्वपूर्ण अल्पावधि वित्तीय साधन के रूप में पहचाना जाता है और इसे व्यापक रूप से अल्पावधि वित्तपोषण के लिए इस्तेमाल किया जाता है। बिल डिस्काउंटिंग की प्रक्रिया में, माल के आपूर्तिकर्ता खरीदार को निश्चित अवधि के बाद एक निश्चित राशि का भुगतान करने के लिए दिशा-निर्देश के बिल को आकर्षित करता है, और खरीदार या बिल के आर्डर से इसकी स्वीकृति प्राप्त करता है।

10.27.7 बिल रेडिस्कॉउंटिंग स्कीम (Bill Rediscouting Scheme)

बिल रेडिस्कॉउंटिंग स्कीम भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 1 नवम्बर, 1970 से लागू किया गया था ताकि भारत में विनिमय के बिल के उपयोग के लिए ऋण और भारत में एक बिल बाजार के निर्माण के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सके। बिल रेडिस्कॉउंटिंग स्कीम के अन्तर्गत, सभी लाइसेंसधारित अनुसूचित बैंक रिजर्व बैंक को विनिमय के बिल की पेशकश के लिए पात्र हैं।

10.27.8 फैक्टरिंग (Factoring)

छात्र प्राप्य प्रबंधन पर यूनिट का उल्लेख कर सकते हैं जिसमें फैक्टरिंग की अवधारणा पर चर्चा की गई है। फैक्टरिंग वित्तपोषण की एक विधि है जिसके माध्यम से एक फर्म वित्तीय संस्थान को छूट

पर अपना व्यापार ऋण बेचता है। दूसरे शब्दों में, फैक्ट्रिंग एक वित्तीय संस्था, (अर्थात् कारक) और एक फर्म (अर्थात् क्लाइंट) के बीच एक निरन्तर व्यवस्था होती है जो क्रेडिट पर व्यापार ग्राहकों को माल और सेवाएँ बेचती है। इस व्यवस्था के अनुसार, कारक ग्राहक के व्यापार ऋणों को खरीदता है जिसमें ग्राहक के साथ या इसके बिना सहारा प्राप्त किए जा सकते हैं, और इस प्रकार, ग्राहक को बढ़ाए गए क्रेडिट पर नियन्त्रण करते हैं और अपने ग्राहक के विक्रय लेजर का संचालन करते हैं। इसे आम आदमी की भाषा में डालने के लिए, एक कारक एक ऐसा एजेंट होता है जो एक निश्चित शुल्क के लिए अपने ग्राहक से बकाया एकत्रित करता है।

फैक्ट्रिंग और बिलों की छूट के बीच के अन्तर इस प्रकार हैं :

(i) फैक्ट्रिंग को 'इनवॉइस फैक्ट्रिंग' कहा जाता है, जबकि बिल डिस्काउंटिंग को "इनवॉइस डिस्काउंटिंग" नाम से जाना जाता है।

(ii) फैक्ट्रिंग में पार्टियों को ग्राहक, कारक और ऋणी के रूप में जाना जाता है, जबकि बिलों में छूट देने पर उन्हें ड्रॉवर, ड्रॉवी और पेयी के रूप में जाना जाता है।

(iii) फैक्ट्रिंग एक प्रकार का बहीखाता प्रबंधन है, जबकि बिल का भुगतान वाणिज्यिक बैंकों से उधार लेने का एक प्रकार है।

(iv) फैक्ट्रिंग के लिए कोई विशेष अधिनियम नहीं है; जबकि बिलों की छूट के मामले में, परक्राम्य लिखित अधिनियम लागू है।

10.28 बैंकों से कार्यशील पूँजी वित्त (Working Capital Finance From Banks)

आज भारत में बैंक किसी भी व्यावसायिक गतिविधि के लिए काम कर रहे पूँजी ऋण के प्रमुख आपूर्तिकर्ता हैं। हाल ही में, कुछ अवधि में उधार देने वाले वित्तीय संस्थानों ने भी कार्यशील पूँजी वित्तपोषण के लिए योजनाएँ घोषित की हैं। दो समितियाँ अर्थात् टंडन समिति और कोअर समिति ने कार्यशील पूँजी वित्तपोषण में निश्चित दिशा-निर्देश और मानदण्ड विकसित किए हैं, जिन्होंने क्षेत्र में विकास और नवाचार की नींव रखी है।

10.28.1 बैंकों द्वारा कार्यशील पूँजी वित्त पर निर्देश (Instruction on Working Capital Finance by Banks)

कार्यशील पूँजी का आकलन (Assessment of Working Capital)—भारतीय रिजर्व बैंक ने अप्रैल 1997 में अधिकतम स्वीकार्य बैंक वित्त की अवधारणा के आधार पर, कामकाजी पूँजी आवश्यकताओं के मूल्यांकन के सम्बन्ध में, पर्चे वापस ले लिये हैं। बैंक अब अपने बोर्डों के अनुमोदन से, मूल्यांकन करने के तरीकों के विकास के लिए स्वतन्त्र हैं निर्धारित विवेकपूर्ण दिशा-निर्देशों और जोखिम मानकों के भीतर उधारकर्ताओं की कार्यशील पूँजी अपेक्षाएं हालांकि, बैंकों को अपने उधार को तैयार करते समय निर्देशित ऋण (जैसे प्राथमिकता क्षेत्र, निर्यात आदि) से सम्बन्धित रिजर्व बैंक के निर्देशों को ध्यान में रखना चाहिए, और क्रेडिट पर प्रतिबन्ध (जैसे कि पुल वित्त, एनबीएफसी द्वारा पूर्व में छूट के बिलों का पुनर्मुद्रण) नीतियों।

उपर्युक्त उदारीकरण के साथ भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा समय समय पर जारी किए गए MPBF से सम्बन्धित सभी निर्देश वापस ले लिए गए हैं। इसके अलावा, बैंक वित्त के मूल्यांकन, मंजूरी, निगरानी और उपयोग में उधार देने वाले अनुशासन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बैंकों को जारी किए गए विभिन्न निर्देश या दिशा-निर्देश अनिवार्य हो जाते हैं। हालांकि, बैंकों को ऐसे निर्देशों या दिशा-निर्देशों को शामिल करने का विकल्प होता है, जिन्हें उनके ऋण नीति या प्रक्रियाओं में आवश्यक माना जाता है।

10.29 बैंक क्रेडिट के फॉर्म (Forms of Bank Credit)

बैंक क्रेडिट आमतौर पर निम्नलिखित रूपों में होगा :

- **नकद क्रेडिट (Cash Credit)** : यह सुविधा बैंकर द्वारा ग्राहकों को निश्चित रूप से निरन्तर आधार पर क्रेडिट सुविधा देकर दी जाएगी। उधारकर्ता को बैंक द्वारा स्वीकृत सीमा से अधिक की अनुमति नहीं दी जाएगी।
- **बैंक ओवरड्राफ्ट (Bank Overdraft)** : धन की जरूरी आवश्यकता के मामले में कम्पनियों को उपलब्ध अल्पकालिका ऋण सुविधा है। बैंक उन रकम पर सीमाएँ लगाएगा, जो वे उधार दे सकते हैं जब उधार ली गई धन की आवश्यकता नहीं रह जाती तो वे जल्दी और आसानी से चुकाए जा सकते हैं। बैंकों को थोड़े समय के नोटिस पर कॉल करने के अधिकार के साथ ओवरड्राफ्ट जारी होते हैं।
- **बिल डिस्काउंटिंग (Bill discounting)** : जो कम्पनी क्रेडिट पर माल बेचती है, वह आमतौर पर खरीदार पर एक बिल खींचना चाहती है जो उसे स्वीकार कर लेते हैं और माल के विक्रेता को भेज देते हैं। विक्रेता, बदले में अपने बैंकर की बिल का छूट देता है। बैंकर आमतौर पर डिस्काउंटिंग बिल की सीमा निर्धारित करेंगे।
- **बिल स्वीकृति (Bills Acceptance)** : इस प्रकार की व्यवस्था के तहत एक कम्पनी बैंक पर विनिमय का बिल खींचती है। बैंक बिल को स्वीकार करता है जिससे कुछ निश्चित भविष्य की तारीख में बिल की राशि का भुगतान करने का वादा किया जा सकता है।
- **क्रेडिट की सीमा (Line of Credit)** : क्रेडिट की रेखा एक बैंक प्रतिबद्धता है जो कि अधिकतम राशि निर्दिष्ट करने के लिए माँग पर एक निश्चित राशि को उधार दे।
- **क्रेडिट का पत्र (Letter of Credit)** : यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा जारीकर्ता बैंक किसी ग्राहक के निर्देशों पर या अपनी तरफ से भुगतान करने या स्वीकार करने या बातचीत करने या अन्य बैंक को ऐसा करने के लिए अधिकृत दस्तावेजों के विरुद्ध निर्दिष्ट शर्तों के अनुपालन के अधीन होता है।
- **बैंक गारन्टी (Bank Guarantee)** : बैंक गारन्टी उन सुविधाओं में से एक है जो वाणिज्यिक बैंक अपने ग्राहकों की तरफ से तीसरे पक्ष के पक्ष में विस्तार करते हैं जो कि गारन्टी के लाभार्थियों के रूप में होंगी।

10.30 अधिकतम अनुमत बैंक वित्त (एमपीबीएफ)–टंडन कमेटी [Maximum Permissible Bank Finance (MPBF) Tendon Committee]

भारतीय रिजर्व बैंक ने 1974 में श्री पी.एल. टंडन की अध्यक्षता में एक अध्ययन समूह स्थापित किया था, जिसे टंडन कमेटी के रूप में जाना जाता है।

समिति की सिफारिशें

1. उधारकर्ताओं द्वारा एक उचित निधि अनुशासन को देखा जाना चाहिए। उन्हें अपनी परिचालन योजनाओं के बारे में बैंकर की जानकारी को अग्रिम रूप से अच्छी तरह से आपूर्ति करनी चाहिए। बैंकर को ऐसी योजनाओं का यथार्थवादी मूल्यांकन करना चाहिए।

2. ऋणदाता के रूप में बैंकर का मुख्य कार्य, मौजूदा सम्पत्तियों के स्वीकार्य स्तर को जारी रखने के लिए उधारकर्ता के संसाधनों को पूरक करने के लिए है। इसके दो निहितार्थ हैं:

(a) वर्तमान परिसम्पत्तियों को उचित और मानदंडों पर आधारित होना चाहिए, और (b) मौजूदा परिसम्पत्तियों को चलाने के लिए धन की आवश्यकता का एक हिस्सा दीर्घकालिक धन से वित्तपोषित होना चाहिए।

3. बैंक को बैंक क्रेडिट का अंतिम उपयोग जानना चाहिए ताकि इसका उपयोग केवल उन प्रयोजनों के लिए किया जाए जिनके लिए यह उपलब्ध कराया गया था।

4. बैंक को इन्वेन्ट्री और प्राप्य मानदंडों का पालन करना चाहिए और साथ ही प्रमुख मानदंडों का भी पालन करना चाहिए। इसने पन्द्रह प्रमुख उद्योगों के लिए सूची और प्राप्य मानदंडों का सुझाव दिया है। इसमें तीन ऋण देने के नियम भी सुझाए गए हैं, जो निम्नानुसार हैं :

ऋण मानदंड (Lending Norms)

पहला तरीका

कुल वर्तमान सम्पत्ति आवश्यक	xxx
कम: वर्तमान देयताएँ	xxx
कार्यशील गैप गैप	xxx
कम: 25% लम्बी अवधि के स्रोतों से	xxx
अधिकतम स्वीकार्य बैंक उधार	xxx

दूसरा तरीका

वर्तमान सम्पत्ति आवश्यक	xxx
कम: 25% को दीर्घावधि निधि प्रदान किया जाना है	xxx
	xxx
कम : वर्तमान देयताएँ	xxx
अधिकतम स्वीकार्य बैंक उधार	xxx

तीसरा तरीका

वर्तमान सम्पत्ति	xxx
कम: कोर वर्तमान सम्पत्ति	xxx
	xxx
कम: 25% लम्बी अवधि के फंड से प्रदान किया जाना है	xxx
	xxx
कम: वर्तमान देयताएँ	xxx
अधिकतम स्वीकार्य बैंक उधार	xxx

I. ऋण लेने वाले को दीर्घकालिक निधियों से कम से कम 25% कार्यशील पूँजी अन्तर में योगदान करना होगा।

एमपीबीएफ = (वर्तमान परिसम्पत्तियों की कम मौजूदा देयताओं) का 75% यानी नेट वर्किंग कैपिटल का 75%

II. उधारकर्ता को कुल मौजूदा परिसम्पत्तियों में से कम से कम 25% का योगदान दीर्घकालिक फंडों से करना है।

एमपीबीएफ = [वर्तमान परिसम्पत्तियों का 75%] कम मौजूदा देयताएँ

III. उधारकर्ता को पूरे हार्ड कोर की मौजूदा परिसम्पत्तियों में योगदान देना होगा और दीर्घकालिक धनराशि से मौजूदा परिसम्पत्तियों के शेष 25% का योगदान करना होगा।

एमपीबीएफ = [75% सॉफ्ट कोर की वर्तमान सम्पत्ति] कम वर्तमान देयताएँ

आरबीआई ने अपनी क्रेडिट पॉलिसी (1997 की शुरुआत) में एमपीबीएफ की अवधारणा को खत्म कर दिया। नए क्रेडिट सिस्टम की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार थीं :

₹ 25 लाख तक की क्रेडिट सीमा की आवश्यकताओं के साथ उधारकर्ताओं के लिए ऋण मूल्यांकनकर्ता के साथ विस्तृत विचार-विमर्श के बाद, विस्तृत मूल्यांकन के लिए गणना की जाएगी।

₹ 25 लाख से ऊपर की आवश्यकता वाले उधारकर्ताओं के लिए, लेकिन ₹ 5 करोड़ तक, उधारकर्ता के अनुमानित सकल बिक्री का 20% तक क्रेडिट सीमा की पेशकश की जा सकती है।

उपर्युक्त श्रेणियों में न आने वाले उधारकर्ताओं के लिए, पूँजी बजट प्रणाली का उपयोग कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं की पहचान के लिए किया जा सकता है।

कोर मौजूदा परिसम्पत्तियाँ (Core Current Assets) मौजूदा परिसम्पत्तियों का स्थायी घटक है, जो कि कम्पनी के लिए लगातार चलने और व्यवहार्य रहने के लिए पूरे वर्ष में आवश्यक होती हैं। “चालू वर्तमान सम्पत्ति” शब्द को टंडन कमेटी ने तैयार किया था जबकि कम्पनी की मौजूदा परिसम्पत्तियों में स्टॉक की मात्रा को समझाया गया था। आमतौर पर, इस तरह की परिसम्पत्तियों को दीर्घकालिक फंडों द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। कभी-कभी कोर वर्तमान परिसम्पत्तियों को “हार्डकोर कार्यशील पूँजी” के रूप में भी जाना जाता है।

ये परिसम्पत्तियाँ तरल नहीं हैं और इसलिए जब कम्पनियों को पैसे की जरूरत होती है, तो वे शुरू में धन जुटाने के लिए गैर-कोर परिसम्पत्तियाँ बेचते हैं (सम्पत्ति जो एक व्यवसाय के निरन्तर कामकाज के लिए महत्वपूर्ण नहीं होती) बेच देते हैं। अगर कोई कम्पनी अपनी कोर वर्तमान सम्पत्ति बेचकर नकदी जुटाने के लिए तैयार है, तो इसका मतलब यह है कि कम्पनी गम्भीर स्थिति में है या दिवालिया होने के करीब है।

कोर वर्तमान परिसम्पत्तियों के उदाहरण कच्ची सामग्रियाँ, कार्य प्रगति में हैं, तैयार सामान, नकद हाथ और बैंक आदि में हैं।

गैर-कोर सम्पत्तियों के उदाहरण प्राकृतिक संसाधन हैं, बॉण्ड, विकल्प और इसी तरह।

उदाहरण : निम्नलिखित डेटा से, टंडन कमेटी द्वारा सुझाए गए तीन तरीकों के तहत अधिकतम स्वीकार्य बैंक वित्त की गणना करें :

देयताएँ	₹ लाख में
लेनदारों	120
अन्य वर्तमान देयताएँ	40
बैंक उधार	250

कुल	410
चालू परिसम्पत्तियाँ	₹ लाख में
कच्ची सामग्री	180
कार्य में प्रगति	60
समाप्त माल	100
प्राप्तियों	150
अन्य मौजूदा परिसम्पत्तियाँ	20
कुल वर्तमान सम्पत्ति	510
कुल कोर वर्तमान सम्पत्ति (सीसीए) ₹200 लाख है।	

हल (Solution)

फर्म के लिए अधिकतम स्वीकार्य बैंक वित्त, तीन तरीकों के तहत निम्नानुसार पता लगाया जा सकता है:

$$\text{विधि I :} = .75 (\text{सीए} - \text{सीएल})$$

$$= .75 (510 - 160)$$

$$= ₹ 262.50 \text{ लाख}$$

$$\text{विधि II :} = .75 (\text{सीए} - \text{सीएल})$$

$$= .75 \times (510) - 160$$

$$= ₹ 222.50 \text{ लाख}$$

$$\text{विधि III :} = .75 \times (\text{सीए} - \text{सीसीए}) - \text{सीएल}$$

$$= .75 \times (510 - 200) - 160$$

$$= ₹ 72.50 \text{ लाख}$$

इसलिए, यह ध्यान दिया जा सकता है कि एमपीबीएफ धीरे-धीरे पहले विधि से दूसरी विधि तक घट जाती है और फिर तीसरे तरीके से घट जाती है। चूँकि फर्म ने, पहले से ₹ 250 लाख के बैंक ऋण का लाभ उठाया है, यह अभी भी पहली विधि के अनुसार ₹ 12.50 लाख का ऋण प्राप्त कर सकता है। हालांकि, दूसरी और तीसरी विधि के अनुसार, यह ₹ 222.50 लाख और ₹ 72.50 लाख का वित्त प्राप्त करने के योग्य है, जबकि इसके वर्तमान बैंक उधार ₹ 250 लाख हैं।

सारांश (SUMMARY)

- कार्यशील पूँजी प्रबन्धन में फर्म की अल्पकालिक परिसम्पत्तियों और उसके अल्पकालिक देयताओं के बीच सन्तुलन का प्रबन्धन शामिल है।
- मूल्य बिन्दु से, कार्यशील पूँजी को सकल कार्यशील पूँजी या शुद्ध कार्यशील पूँजी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- समय के दृष्टिकोण से, कार्यशील पूँजी शब्द को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे कि स्थायी और अस्थायी।

- बड़ी संख्या में कार्यशील पूँजी का मतलब होगा कि कम्पनी के पास निष्क्रिय धन है। चूँकि धन की लागत होती है, इसलिए कम्पनी को इस तरह के फंडों पर ब्याज के रूप में बड़ी राशि का भुगतान करना पड़ता है। अगर फर्म अपर्याप्त कार्यशील पूँजी है, तो ऐसी फर्म दिवालिया होने का जोखिम चलाती है।
- कार्यशील पूँजी आवश्यकता के लिए नियोजन करते समय कुछ वस्तुओं या कारकों पर विचार करने की आवश्यकता होती है जैसे व्यापार, बाजार और माँग की स्थिति, संचालन दक्षता, क्रेडिट नीति आदि की प्रकृति।
- वित्त प्रबन्धक को मौजूदा परिसम्पत्तियों के स्तर और उनके वित्तपोषण के लिए विशेष ध्यान देना होगा। मौजूदा परिसम्पत्तियों के स्तर और वित्तपोषण का निर्णय लेने के लिए जोखिम वापसी व्यापार को ध्यान में रखा जाना चाहिए।
- मौजूदा परिसम्पत्तियों के इष्टतम स्तर का निर्धारण करने में, फर्म को लाभप्रदता को संतुलित करना चाहिए—कुल लागतों को कम करके ऋण शोधन क्षमता उलझा देना।
- कार्यशील पूँजी चक्र सामग्री के लिए कम्पनी के भुगतान के बीच समय की लम्बाई को, स्टॉक में प्रवेश कर और तैयार माल की बिक्री से नकद प्राप्त कर, इंगित करता है। इसे चक्र में प्रत्येक चरण के लिए आवश्यक दिनों की संख्या जोड़कर निर्धारित किया जा सकता है।
- ट्रेजरी प्रबन्धन को सभी वित्तीय मामलों के कॉर्पोरेट हैंडलिंग, व्यापार के लिए बाहरी और आंतरिक धन की उत्पत्ति, मुद्राओं का प्रबन्धन और नकदी प्रवाह और कॉर्पोरेट वित्त की जटिल, रणनीतियों, नीतियों और प्रक्रियाओं के रूप में परिभाषित किया गया है।
- किसी व्यवसाय के लिए नकद प्रबन्धन के मुख्य उद्देश्य हैं:—अपनी प्रत्येक इकाइयों के लिए पर्याप्त नकद उपलब्ध कराएं,
निष्क्रिय नकद में कोई धन नहीं अवरुद्ध है; तथा
व्यापार के लिए रिटर्न के लिए अधिशेष नकद (यदि कोई हो) निवेश किया जाना चाहिए।
- विभिन्न देनदारों में बड़ी मात्रा में जुड़ा हुआ है, बुरे ऋणों की सम्भावना है और ऋणों के संग्रह की लागत होगी। इसके विपरीत, यदि विभिन्न देनदारों में निवेश कम है, तो विक्रय प्रतिबन्धित हो सकता है, क्योंकि प्रतिस्पर्धी अधिक उदार शर्तों की पेशकश कर सकते हैं। इसलिए, विविध देनदारों का प्रबन्धन एक महत्वपूर्ण मुद्दा है और उचित नीतियों और उनके कार्यान्वयन की आवश्यकता है।
- मूल रूप से विभिन्न देनदारों के प्रबन्धन के तीन पहलू हैं: क्रेडिट नीति, क्रेडिट विश्लेषण और प्राप्य का नियन्त्रण।
- व्यापार लेनदार अर्थ में वित्त का एक सहज स्रोत है जो यह सामान्य व्यापार लेन—देन से उत्पन्न होता है। लेकिन आपके लेनदारों की देखभाल करना भी महत्वपूर्ण है—आपके द्वारा धीमे भुगतान से बुरा लग सकता है और आपकी आपूर्ति बाधित हो सकती है और आपकी कम्पनी के लिए खराब छवि भी बना सकती है।

- लेनदार प्रभावी नकदी प्रबन्धन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और नकदी की स्थिति को बढ़ाने के लिए सावधानीपूर्वक प्रबन्धित किया जाना चाहिए।
- जैसे कि पहले चर्चा की गई, यह सलाह दी जाती है कि वित्त प्रबन्धक स्थायी कार्यशील पूँजी और अस्थायी कार्यशील पूँजी के बीच कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं को विभाजित करता है।
- बिक्री में उतार-चढ़ाव के बावजूद स्थायी कामकाजी पूँजी की हमेशा जरूरत होती है, इसलिए दीर्घावधि के स्रोतों जैसे कि ऋण और इक्विटी द्वारा वित्तपोषित किया जाना चाहिए। इसके विपरीत कार्यशील पूँजी वित्त के अल्पकालिक स्रोतों द्वारा वित्तपोषित हो सकती है।

आपके ज्ञान का परीक्षण

MCQs पर आधारित प्रश्न [MCQs Based Questions]

1. क्रेडिट शर्तों को "3/15 नेट 60" के रूप में व्यक्त किया जा सकता है इसका मतलब यह है कि यदि ग्राहक 15 दिनों के भीतर भुगतान करता है तो 3% छूट दी जाएगी, अगर वह प्रस्ताव का लाभ नहीं लेती तो उसे 60 दिनों के भीतर भुगतान करना होगा :
 - (A) मैं बयान के साथ सहमत हूँ।
 - (B) मैं बयान के साथ सहमत नहीं हूँ।
 - (C) मैं नहीं कह सकता।
2. शब्द 'नेट 50' का अर्थ है कि ग्राहक भुगतान करेगा :
 - (A) वास्तव में 50वें दिन पर
 - (B) 50 वें दिन से पहले
 - (C) 50 वें दिन की तुलना में बाद में नहीं
 - (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
3. व्यापार क्रेडिट का एक स्रोत है:
 - (A) दीर्घकालिक वित्त
 - (B) मध्यम अवधि वित्त
 - (C) वित्त का सहज स्रोत
 - (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
4. शब्द फ्लोट में उपयोग किया जाता है :
 - (A) इन्वेंटरी प्रबन्धन
 - (B) प्राप्य प्रबन्धन
 - (C) नकद प्रबन्धन
 - (D) बाजार योग्य प्रतिभूतियाँ

5. नकद प्रबन्धन के विलियम जे बॉमोल का मॉडल नकद स्तर निर्धारित करता है जहाँ ले जाने की लागत और लेन-देन लागत होती है :
- (A) अधिकतम
(B) न्यूनतम
(C) मध्यम
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
6. नकद प्रबन्धन मिलर-ORR मॉडल में :
- (A) नकद बैलेंस के निचले, ऊपरी सीमा और वापसी बिन्दु का निर्धारण किया जाता है।
(B) केवल ऊपरी सीमा और वापसी बिन्दु का निर्णय लिया गया है।
(C) केवल निचली सीमा और वापसी बिन्दु का निर्णय लिया गया है।
(D) ऊपर से कोई भी निर्णय नहीं लिया गया है।
7. कार्यशील पूँजी के रूप में परिभाषित किया गया है
- (A) वर्तमान देनदारियों पर मौजूदा सम्पत्ति की अधिकता
(B) वर्तमान सम्पत्ति पर वर्तमान देनदारियों की अधिकता
(C) दीर्घकालिक देनदारियों पर स्थिर परिसम्पत्तियों के अतिरिक्त
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
8. कार्यशील पूँजी को "परिसंचरण पूँजी, अस्थिर पूँजी और घूमने वाली पूँजी" के रूप में भी जाना जाता है। उपर्युक्त कथन है:
- (A) सही
(B) गलत
(C) कह नहीं सकते
9. कार्यशील पूँजी प्रबन्धन के मूल उद्देश्य हैं :
- (A) मुनाफे के लिए संसाधनों का इष्टतम उपयोग
(B) दिन-प्रतिदिन वर्तमान दायित्वों को पूरा करने के लिए
(C) मौजूदा परिसम्पत्तियों पर सीमान्त रिटर्न सुनिश्चित करना हमेशा पूँजी की लागत से अधिक है
(D) उपर्युक्त विवरण में से किसी एक को चुनें।
10. सकल कार्यशील पूँजी शब्द के रूप में जाना जाता है :
- (A) वर्तमान देनदारियों में निवेश
(B) दीर्घकालिक देयता में निवेश
(C) मौजूदा परिसम्पत्तियों में निवेश
(D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

11. शुद्ध कार्यशील पूँजी शब्द मौजूदा परिसम्पत्तियों के वर्तमान ऋणों के अन्तर को दर्शाता है :
- (A) वक्तव्य सही है।
 (B) वक्तव्य गलत है।
 (C) मैं नहीं कह सकता।
12. शब्द “कोर वर्तमान सम्पत्ति” द्वारा गढ़ा गया था :
- (A) कोरियर कमेटी
 (B) टंडन समिति
 (C) जिलानी समिति
 (D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं
13. अवधारणा संचालन चक्र, औसत समय में दर्शाता है जो कच्चे माल के अधिग्रहण और अंतिम नकदी की प्राप्ति के बीच बची हुई है। यह कथन है :
- (A) सही
 (B) गलत
 (C) अंशतः सच
 (D) मैं नहीं कह सकता
14. आत्म-लागू वित्तीय अनुशासन के मामले में, कुछ पेशेवर प्रबन्धन संगठनों में अब शून्य दिनों में शून्य कार्यशील पूँजी की स्थिति हो सकती है :
- (A) हाँ
 (B) कोई
 (C) असम्भव
 (D) कह नहीं सकते
15. जब कोई व्यवसाय उपलब्ध धनराशि के स्तर से अधिक का विस्तार करता है तो व्यापार अधिक हो जाता है। बयान है :
- (A) गलत
 (B) सही
 (C) आंशिक रूप से सही
 (D) मैं नहीं कह सकता
16. एक कंजर्वेटिव वर्किंग कैपिटल स्ट्रैटेजी बिक्री के सम्बन्ध में मौजूदा परिसम्पत्तियों के उच्च स्तर की माँग करती है :
- (A) मैं सहमत हूँ
 (B) सहमत न हो
 (C) मैं नहीं कह सकता

17. कार्यशील पूँजी का लाभ उठाने वाला कार्य कम्पनी की मुनाफे पर कार्यशील पूँजी के स्तर के प्रभाव का सन्दर्भ देता है। यह वर्तमान परिसम्पत्तियों में होने वाले परिवर्तनों के लिए आरओसीई की प्रतिक्रिया को मापता है :
- (A) मैं सहमत हूँ
 (B) सहमत न हो
 (C) बयान आंशिक रूप से सच है
18. वित्त का सहज स्रोत शब्द का अर्थ है जो व्यापार के संचालन के दौरान स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है। बयान है :
- (A) सही
 (B) गलत
 (C) आंशिक रूप से सही
 (D) मैं नहीं कह सकता
19. एक फर्म की कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं के वित्तपोषण के लिए हेजिंग दृष्टिकोण के तहत, बैलेंस शीट परिसम्पत्तियों की प्रत्येक परिसम्पत्तियों को उसी अनुमानित परिपक्वता के वित्तपोषण साधन से भर दिया जाएगा। यह कथन है :
- (A) गलत
 (B) सही
 (C) आंशिक रूप से सही
 (D) मैं नहीं कह सकता
20. व्यापार क्रेडिट एक है :
- (A) वित्त का वार्ता स्रोत
 (B) वित्त के हाइब्रिड स्रोत
 (C) वित्त का सहज स्रोत
 (D) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं
21. फ़ैक्टरिंग वित्तपोषण की एक विधि है जिसके तहत एक फर्म अपने व्यापार ऋण को वित्तीय संस्थान को छूट में बेचता है। बयान है :
- (A) सही
 (B) गलत
 (C) आंशिक रूप से सही
 (D) मैं नहीं कह सकता

22. एक फैक्ट्रिंग व्यवस्था सहारा के साथ-साथ सहारा के साथ भी हो सकती है :
- (A) सत्य
(B) झूठ
(C) आंशिक रूप से सही
(D) कह नहीं सकते
23. कार्यशील पूँजी का बैंक वित्तपोषण आमतौर पर निम्नलिखित रूप में होगा। नकद ऋण, ओवरड्राफ्ट, डिलीवरी बिल, बिल स्वीकृति, क्रेडिट की रेखा; क्रेडिट का पत्र और बैंक गारंटी
- (A) मैं सहमत हूँ
(B) मैं सहमत नहीं हूँ
(C) मैं नहीं कह सकता
24. जब माल की वस्तुएँ उपयोग के मूल्य के अनुसार वर्गीकृत की जाती हैं, तो तकनीक को इस प्रकार से जाना जाता है :
- (A) एक्सवार्डेज्ड विश्लेषण
(B) एबीसी विश्लेषण
(C) डीईएफ विश्लेषण
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
25. जब कोई फर्म अपने ग्राहकों को विशेष डाकघर संग्रह केन्द्रों को अपने भुगतान मेल करने की सलाह देता है, तो प्रणाली को इस रूप में जाना जाता है।
- (A) एकाग्रता बैंकिंग
(B) लॉक बॉक्स सिस्टम
(C) फ्लोट खेलना
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

सैद्धांतिक प्रश्न (Theoretical Questions)

- कार्यशील पूँजी की आवश्यकता का निर्धारण करते समय ध्यान में आने वाले कारकों पर चर्चा करें।
- कार्यशील पूँजी के प्रबन्धन में तरलता बनाम लाभप्रदता मुद्दे पर चर्चा करें।
- परिचालन चक्र प्रक्रिया के आधार पर कार्यशील पूँजी की आवश्यकता के अनुमान पर चर्चा करें।
- ट्रेजरी विभाग के कार्यों को संक्षेप में बताएँ।
- नकदी प्रबन्धन के बॉमोल मॉडल का वर्णन करें।
- इलेक्ट्रॉनिक नकद प्रबन्धन प्रणाली का लाभ बताएँ।
- बॉमोल के नकदी प्रबन्धन मॉडल के अनुसार इष्टतम नकद शेष का निर्धारण करने के लिए प्रयुक्त फार्मूला उदाहरण के साथ समझाओ।
- मिलर-ओर केश प्रबन्धन मॉडल पर चर्चा करें।
- खातों प्राप्य सिस्टम संक्षेप में बताएँ।
- फैक्ट्रिंग पर लघु नोट लिखें।
- एक व्यापार संगठन की कार्यशील पूँजी के वित्तपोषण में बैंक क्रेडिट के विभिन्न रूपों को बताएँ।

व्यावहारिक समस्याएँ (Practical Questions)

1. पीक्यू लिमिटेड, 2019 में एक नए कारोबार शुरू करने वाले कम्पनी में निम्नलिखित अनुमानित लाभ और हानि खाते हैं:

	(₹)	(₹)
बिक्री		2,10,000
बेचे गए सामान की लागत		1,53,000
सकल लाभ		57,000
प्रशासनिक व्यय	14,000	
बिक्री का खर्च	13,000	27,000
कर देने से पूर्व लाभ		30,000
कराधान के लिए प्रावधान		10,000
कर अदायगी के बाद लाभ		20,000
बेचे जाने वाले सामानों की लागत निम्नानुसार है:		
उपयोग किया गया सामन	84,000	
मजदूरी और निर्माण व्यय	62,500	
मूल्यहास	23,500	
	1,70,000	
घटाया : तैयार माल का स्टॉक (अभी तक बेचे जाने वाले उत्पाद का 10%)	17,000	
	1,53,000	

ऊपर दिए गए आँकड़ें केवल तैयार वस्तुओं से सम्बन्धित हैं और कार्य-प्रगति के लिए नहीं। साल के उत्पादन (भौतिक इकाइयों के मामले में) के 15% के बराबर सामान प्रक्रिया में पूरी सामग्री की आवश्यकता होगी, लेकिन अन्य खर्चों का केवल 40%। कम्पनी स्टॉक में दो महीने की खपत के बराबर सामग्री रखने में विश्वास करती है।

सभी खर्चों का भुगतान एक महीने पहले किया जाएगा। सामग्रियों के आपूर्तिकर्ता 1-1/2 महीने के क्रेडिट का विस्तार करेंगे। नकद के लिए बिक्री 20% और बाकी दो महीने की क्रेडिट पर होगी। आयकर का 70% तिमाही किस्तों में अग्रिम भुगतान किया जाएगा। कम्पनी नकद में ₹ 8,000 का निवेश करना चाहती है। अप्रत्याशित आकस्मिकताओं के लिए अनुमानित आँकड़े में 10% जोड़ना होगा।

कार्यशील पूँजी का एक अनुमान तैयार करें।

नोट : सभी कार्य को उत्तर का हिस्सा होना चाहिए।

2. एमए लिमिटेड एक प्लास्टिक के निर्माण के लिए एक नई परियोजना शुरू कर रहा है। 12,000 इकाइयों के वार्षिक उत्पादन के लिए निम्न लागत की जानकारी का पता लगाया गया है जो पूरी क्षमता है :

	लागत प्रति इकाई (₹)
सामग्री	40.00
प्रत्यक्ष श्रम और परिवर्तनीय खर्च	20.00
निर्धारित विनिर्माण व्यय	6.0
मूल्यहास	10.00
निर्धारित प्रशासन व्यय (कारखाने से सम्बन्धित)	4.00
	80.00

प्रति इकाई की बिक्री मूल्य ₹ 96 होने की उम्मीद है और बिक्री खर्च ₹ 5 प्रति यूनिट, जिनमें से 80% चर है।

संचालन के पहले दो वर्षों में, उत्पादन और बिक्री की अपेक्षा निम्न प्रकार की जाती है:

वर्ष	उत्पादन (इकाइयों की संख्या)	बिक्री (इकाइयों की संख्या)
1	6,000	5,000
2	9,000	8,500

कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं का आकलन करने के लिए, निम्नलिखित अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध है :

- सामग्री का स्टॉक 2-25 महीने का औसत उपभोग
- कार्य में प्रक्रिया शून्य
- देनदार 1 महीने की औसत बिक्री
- नकद शेष राशि 10,000
- वर्ष के दौरान सामग्री की आपूर्ति के लिए लेनदार 1 महीने की औसत खरीद।
- खर्च के लिए लेन-देन वर्ष के दौरान सभी खर्चों का 1 महीने का औसत

दो साल के लिए तैयार करें :

- लाभ या हानि का एक अनुमानित बयान (कारण को अनदेखा करना); तथा
- कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं का एक अनुमानित बयान।

3. अनेजा लिमिटेड, एक नवगठित कम्पनी ने अपनी कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं को वित्तपोषण के लिए पहली बार वाणिज्यिक बैंक के लिए आवेदन किया है। चालू वर्ष के अनुमानों के बारे में निम्नलिखित जानकारी उपलब्ध है :

गतिविधि का अनुमानित स्तर: उत्पादन का 1,04,000 पूर्ण इकाइयाँ और कार्य प्रगति में 4,000 इकाइयाँ हैं। उपर्युक्त गतिविधि के आधार पर अनुमानित लागत प्रति इकाई है :

कच्चा माल	₹ 80 per unit
प्रत्यक्ष मजदूरी	₹ 30 per unit
ओवरहेड्स (मूल्यह्रास का अनन्य)	₹ 60 per unit
कुल लागत	₹ 170 per unit
विक्रय मूल्य	₹ 200 per unit

स्टॉक में कच्ची सामग्रियाँ : औसत 4 सप्ताह की खपत, काम की प्रगति (रूपांतरण लागत के सम्बन्ध में 50% पूरा होने की अवस्था मान लें) (प्रसंस्करण की शुरुआत में जारी सामग्रियाँ)।

स्टॉक में समाप्त माल	8,000 इकाइयाँ
आपूर्तिकर्ताओं द्वारा स्वीकृत क्रेडिट	औसत 4 सप्ताह
देनदार/प्राप्तियों की स्वीकृत क्रेडिट	औसत 8 सप्ताह
मजदूरी के भुगतान में अन्तर	औसत 1.5 सप्ताह

बैंकों पर नकदी (चिकनी संचालन के लिए) ₹ 25,000 होने की उम्मीद है।

मान लें कि उत्पादन पूरे वर्ष (52 सप्ताह) में समान रूप से किया जाता है मजदूरी और ओवरहेड्स समान रूप से अर्जित होते हैं। सभी बिक्री केवल क्रेडिट आधार पर हैं।

आपको आवश्यक नेट कार्यशील पूँजी की गणना करना आवश्यक है।

4. निम्नलिखित जानकारी जेद्दा लिमिटेड, एक प्रकाशन कम्पनी से सम्बन्धित है:

एक पुस्तक की बिक्री मूल्य ₹ 15 है, और एक पुस्तक क्लब के माध्यम से बिक्री पर क्रेडिट किया जाता है और महीने के आखिरी दिन चालान किया जाता है।

प्रत्येक पुस्तक में उत्पादन की परिवर्तनीय लागतें सामग्री (₹ 5), श्रम (₹ 4), और ओवरहेड (₹ 2)

बिक्री प्रबन्धक ने निम्नलिखित खंडों की भविष्यवाणी की है:

महीने	पुस्तकों की संख्या
नवम्बर	1000
दिसम्बर	1000
जनवरी	1000
फरवरी	1,250
मार्च	1,500
अप्रैल	2000
मई	1,900
जून	2,200
जुलाई	2,200
अगस्त	2,300

ग्राहकों को निम्नानुसार भुगतान करने की उम्मीद है:

बिक्री के एक महीने बाद 40%

बिक्री के दो महीने बाद 60%

कम्पनी बेचे जाने के दो महीने पहले किताबें बनाती है और सामग्री के लिए लेनदारों को उत्पादन के दो महीने बाद भुगतान किया जाता है। चल खर्च का उत्पादन निम्न महीने में किया जाता है और अप्रैल में 25% की वृद्धि होने की उम्मीद है; 75% मजदूरी उत्पादन के महीने में और अगले महीने 25% में भुगतान किया जाता है। 12.5% की मजदूरी में वृद्धि 1 मार्च को होगी। कम्पनी पुनर्गठन के माध्यम से की जा रही है और ₹ 25,000 में मई में अपनी फ्रीहोल्ड प्रॉपर्टी में से एक को बेच देगी, लेकिन यह मई में ₹ 10,000 के लिए एक नया प्रिंटिंग प्रेस खरीदने की योजना बना रहा है। मूल्यहास वर्तमान में ₹ 1,000 प्रति माह है, और नई मशीन की खरीद के बाद रुपये ₹ 1,500 हो जाएगा।

कम्पनी के निगम कर (₹ 10,000 का) मार्च में भुगतान के लिए है।

वर्तमान में कम्पनी के पास 31 दिसम्बर 20X3 को बैंक नकद शेष राशि ₹ 1500 है।

जनवरी से जून तक आपको छह महीने के लिए नकद बजट तैयार करने की आवश्यकता है।

5. जानकारी और धारणा से कि 1 जनवरी, 2017 को नकद शेष राशि ₹ 72,500 है नकद बजट तैयार करें। मान लें कि कुल बिक्री का 50 प्रतिशत नकदी बिक्री है। फरवरी और अप्रैल के महीनों में परिसम्पत्तियों का अधिग्रहण किया जाना है इसलिए, इसके लिए ₹ 8,000 और ₹ 25,000 के भुगतान के लिए प्रावधान किए जाने चाहिए। बैंक को ₹ 30,000 के ऋण की अनुदान के लिए एक आवेदन दिया गया है और उम्मीद है कि ऋण राशि मई के महीने में प्राप्त की जाएगी। यह अनुमान लगाया जाता है कि जून में ₹ 35,000 का लाभांश का भुगतान किया जाएगा। देनदारों को एक माह की क्रेडिट की अनुमति है। खरीदी गई सामग्री के लिए लेनदारों और ओवरहेड्स एक महीने का क्रेडिट प्रदान करते हैं। बिक्री आयोग पर बिक्री पर 3 प्रतिशत प्रत्येक महीने विक्रेता को दिया जाता है।

महीना	बिक्री (₹)	सामग्री खरीद (₹)	वेतन और मजदूरी (₹)	उत्पादन ओवरहेड्स (₹)	ऑफिस और सेलिंग ओवर हेड्स (₹)
जनवरी	72,000	25,000	10,000	6,000	5,500
फरवरी	97,000	31,000	12,100	6,300	6,700
मार्च	86,000	25,500	10,600	6,000	7,500
अप्रैल	88,600	30,600	25,000	6,500	8,900
मई	1,02,500	37,000	22,000	8,000	11,000
जून	1,08,700	38,800	23,000	8,200	11,500

6. 31 दिसम्बर 20X8 की माया लिमिटेड के तुलना पत्र (Balance Sheet) समझे कम्पनी ने एक बड़ा ऑर्डर प्राप्त किया है और अपने ऋण को बढ़ाने के लिए अपने बैंक जाने की आवश्यकता का अनुमान लगाया है। नतीजतन इसे जनवरी, फरवरी और मार्च, 20X9 के लिए अपनी नकदी आवश्यकताओं का पूर्वानुमान लगाना होगा। आमतौर पर कम्पनी बिक्री के महीने में अपनी बिक्री का 20 प्रतिशत बाद के महीने में 70 प्रतिशत और बिक्री के बाद दूसरे महीने में 10 प्रतिशत का संग्रह करती है। सारी बिक्री उधार बिक्री है।

साम्य और दायित्व	(₹)	सम्पत्तियाँ	(₹)
सामान्य अंश पूँजी	100	शुद्ध स्थायी सम्पत्तियाँ	1836
प्रतिधारित आय	1439	वस्तुएं	545
दीर्घकालीन ऋण	450	लेखा अभिग्राह्य	530
लेखा देय	360	नकद तथा बैंक	50
बैंक से ऋण	400		
अन्य ऋण	412		
	212		
कुल सम्पत्ति	2,961		2,961

बिक्री से पहले माह में कच्चे माल की खरीद की जाती है और बिक्री की मात्रा की 60 प्रतिशत होती है। बाद के महीने में इसका भुगतान किया जाता है। इन खरीद का भुगतान में खरीद के बाद होता है। अतिरिक्त समय सहित श्रम लागत जनवरी में ₹ 1,50,000 फरवरी में ₹ 2,00,000 तथा मार्च में ₹ 1,60,000 होने की उम्मीद है। जनवरी से मार्च तक बिक्री, प्रशासन कर तथा अन्य नकद खर्च ₹ 1,00,000 प्रतिमाह होने की उम्मीद है। नवम्बर और दिसम्बर में वास्तविक बिक्री जनवरी से अप्रैल के लिए अनुमानित निम्नानुसार है (हजार में) :

माह	(₹)	माह	(₹)	माह	(₹)
नवम्बर	500	जनवरी	600	मार्च	650
दिसम्बर	600	फरवरी	1000	अप्रैल	750

इस सूचना के आधार पर :

- जनवरी, फरवरी और मार्च के लिए नकद बजट तैयार करें।
 - हर समय ₹ 50,000 के नकद शेष को बनाए रखने के लिए आवश्यक अतिरिक्त बैंक ऋण की राशि निर्धारित करें।
 - 31 मार्च के लिए एक प्रारूप तुलना पत्र तैयार करें।
7. पीक्यूआर लिमिटेड, जिसकी वार्षिक बिक्री 30 लाख रुपए है, अपनी वर्तमान संग्रह नीति को फिर से विचार कर रहा है। वर्तमान में, औसत संग्रह अवधि 50 दिन है और खराब कर्ज हानि बिक्री का 5% है। प्राप्य संग्रह के कारण कम्पनी 30,000 रुपये खर्च कर रही है। फंड की लागत 10 प्रतिशत है।

वैकल्पिक नीतियाँ निम्नानुसार हैं :

	विकल्प I	विकल्प II
औसत वसूली अवधि	40 दिन	30 दिन
बुरा ण हानि	बिक्री का 4%	बिक्री का 3%
संग्रह व्यय	₹ 60,000	₹ 95,000

वृद्धिशील दृष्टिकोण और राज्य के आधार पर विकल्पों का मूल्यांकन करें और बताएँ जो विकल्प अधिक लाभकारी है।

8. बिक्री और मुनाफे में वृद्धि करने की रणनीति के एक हिस्से के रूप में, एक कम्पनी के बिक्री प्रबन्धक ने नए ग्राहकों के समूह में माल बेचने का प्रस्ताव किया है, जिनका भुगतान न होने पर 10% जोखिम है। इस समूह को डेढ़ महीने की क्रेडिट की आवश्यकता होती है और ₹ 1,00,000 प्रति वर्ष बिक्री में वृद्धि की सम्भावना है। उत्पादन और बिक्री का खर्च बिक्री का 80% है और आयकर दर 50% है। कम्पनी की न्यूनतम जरूरी दर (कर के बाद) की दर 25% है।

क्या बिक्री प्रबन्धक को प्रस्ताव स्वीकार करना चाहिए ?

इसके अलावा, भुगतान न होने पर जोखिम को कम करने से जोखिम की डिग्री भी मिलती है जो कि कम्पनी को यह मानने के लिए तैयार होना चाहिए कि वापसी के लिए आवश्यक दर (कर के बाद) (i) 30%, (ii) 40% और (iii) 60% थी।

9. स्लो पयेर्स, गुड्स डीलर्स लिमिटेड कलकत्ता के नियमित ग्राहक हैं और उन्होंने डीलर्स माल खरीदने के लिए क्रेडिट सुविधा के विस्तार के लिए विक्रेताओं से सम्पर्क किया है। पिछले प्रदर्शन का विश्लेषण और आपूर्ति की गई जानकारी के आधार पर, भुगतानकर्ताओं को धीमा करने के सम्बन्ध में भुगतान शेड्यूल का निम्नलिखित पैटर्न उभरा है :

	भुगतान शेड्यूल का पैटर्न
30 दिनों के अंत में	बिल का 15%
60 दिनों के अंत में	बिल का 34%
90 दिनों के अंत में	बिल का 30%
100 दिनों के अंत में	बिल का 20%
गैर-वसूली	बिल का 1%

स्लो पयेर्स 2017 में ₹ 15 लाख के माल की खरीद के लिए एक दृढ़ प्रतिबद्धता में प्रवेश करना चाहते हैं, कैलेंडर वर्ष में प्रत्येक तिमाही के पहले दिन समान मात्रा में वितरण किए जाने के लिए वितरण कमोडिटी की प्रति यूनिट 150 है जिस पर 5 प्रति यूनिट का लाभ होने की उम्मीद है। गुड्स डीलर्स लिमिटेड द्वारा यह अनुमान लगाया गया है कि इस अनुबंध को लेने से प्रतिवर्ष ₹ 5,000 प्रति वर्ष के अतिरिक्त आवर्ती व्यय का मतलब होगा। अगर गुड्स डीलर्स ने हाथ में निधियों का अवसर लागत 24% है, तो क्या आप विक्रेता के वित्त प्रबन्धक धीमी दाताओं को क्रेडिट की अनुदान की सिफारिश करेंगे? कार्य आपके उत्तर का हिस्सा होना चाहिए। वर्ष 365 दिनों का मानें।

उत्तर/समाधान

MCQs पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

- | | | | | | |
|---------|----------|----------|----------|----------|----------|
| 1. (a), | 2. (c), | 3. (c), | 4. (c), | 5. (b), | 6. (a), |
| 7. (a), | 8. (a), | 9. (b), | 10. (c), | 11. (a), | 12. (b), |
| 13.(a), | 14. (a), | 15. (b), | 16. (a), | 17. (a), | 18. (a), |
| 19.(b), | 20. (c), | 21. (a), | 22. (a), | 23. (a), | 24. (b), |
| 25.(b). | | | | | |

सैद्धान्तिक प्रश्नों के उत्तर

1. कृपया पैराग्राफ 10.3 देखें
2. कृपया पैराग्राफ 10.4.1 देखें
3. कृपया पैराग्राफ 10.5 देखें
4. कृपया पैराग्राफ 10.8 देखें
5. कृपया पैराग्राफ 10.11.1 देखें
6. कृपया पैराग्राफ 10.12.6 देखें
7. कृपया पैराग्राफ 10.11.1 देखें
8. कृपया पैराग्राफ 10.11.2 देखें
9. कृपया पैराग्राफ 10.21 देखें
10. कृपया पैराग्राफ 10.20 देखें
11. कृपया पैराग्राफ 10.29 देखें

व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर

1. कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं को दर्शाए

विवरण	₹	₹
(a) वर्तमान सम्पत्ति :		
इवेन्ट्री (Inventory) :		
कच्चे माल का स्टॉक (₹96,600 × 2 / 12)	16,100	
कार्य प्रगति का स्टॉक (कार्य नोट के अनुसार)	16,350	
तैयार माल का स्टॉक (₹1,46,500 × 10/100)	14,650	
प्राप्तियाँ (देनदार) (₹1,27,080 × 2/12)	21,180	
हतस्थ रोकड़	8,000	
पूर्वदत्त व्यय :		
मजदूरी व विनिर्माण व्यय (₹66,250 × 1/12)	5,521	
प्रशासनिक व्यय (₹14,000 × 1/12)	1,167	
बिक्री और वितरण व्यय (₹13,000 × 1/12)	1,083	

अग्रिम करों का भुगतान [(₹10,000 का 70%) × 3 / 12]	1,750	
सकल कार्यशील पूँजी	<u>85,801</u>	<u>85,801</u>
(b) वर्तमान दायित्व :		
कच्चे माल के लिए भुगतान (₹1,12,700 × 1.5/12)	14,088	
कराधान के लिए प्रावधान ;अग्रिम कर का शुद्ध (₹10,000 × 30/100)	<u>3,000</u>	
कुल वर्तमान दायित्व	<u>17,088</u>	<u>17,088</u>
(c) CA से अधिक CL		68,713
(+) आकस्मिक आकस्मिकताओं के लिए 10%		6,871
शुद्ध आवश्यक कार्यशील पूँजी		75,584

कार्यशील नोट्स :

(i) कार्य प्रगति के स्टॉक की गणना

विवरण	₹
कच्चा माल (₹84,000 × 15%)	12,600
मजदूरी व विनिर्माण व्यय (₹62,500 × 15% × 40%)	3,750
कुल	16,350

(ii) तैयार माल के स्टॉक और बिक्री की लागत की गणना

विवरण	₹
प्रत्यक्ष माल लागत (₹84,000 + ₹12,600)	96,600
मजदूरी व विनिर्माण व्यय [₹62,500 + ₹3,750]	66,250
ह्रास	0
सकल कारखाना लागत	1,62,850
(-) समापन W.I.P	(16,350)
माल की लागत का उत्पादन	1,46,500
(+) प्रशासनिक व्यय	14,000
	1,60,500
(-) समापन स्टॉक	14,650
बेचे गए माल की लागत	1,45,850
(+) बिक्री व वितरण व्यय	13,000
बिक्री की कुल नकद लागत	1,58,850
देनदार (बिक्री की नकद लागत का 80%)	1,27,080

(iii) उधार खरीद की गणना

विवरण	₹
कच्चे माल का उपभोग	96,600
(+) समापन स्टॉक	16,100
(-) प्रारम्भिक स्टॉक	—
खरीद	1,12,700

2. (i)

एम.ए. लिमिटेड

लाभ/हानि का अनुमानित विवरण

(कारखान की अनदेखी)

विवरण	वर्ष 1	वर्ष 2
उत्पादन (इकाइयों में)	6,000	9,000
बिक्री (इकाइयों में)	5,000	8,500
	₹	₹
बिक्री राजस्व (a) (बिक्री इकाई × 96) उत्पादन की लागत :	4,80,000	8,16,000
माल की लागत (उत्पादित इकाई × 40)	2,40,000	3,60,000
प्रत्यक्ष मजदूरी और परिवर्तनीय व्यय (उत्पादित इकाई × 20)	1,20,000	1,80,000
निश्चित विनिर्माण व्यय (उत्पादन क्षमता : 12000 इकाइयों × ₹ 6)	72,000	72,000
ह्रास	1,20,000	1,20,000
(उत्पादन क्षमता : 12000 इकाइयों × 10)		
निश्चित प्रशासनिक व्यय	48,000	48,000
(उत्पादन क्षमता : 12,000 इकाइयों × ₹ 4)		
उत्पादन की कुल लागत	6,00,000	7,80,000
(+) तैयार माल का प्रारम्भिक स्टॉक		1,00,000
(वर्ष 1 : शून्य : वर्ष 2 : 1,000 इकाइयों)		
बिक्री के लिए उपलब्ध माल की लागत	6,00,000	8,80,000
(वर्ष 1 : 6000 इकाई : वर्ष 2 : 10,000 इकाई)		
(-) औसतन लागत पर तैयार माल समापन स्टॉक	(1,00,000)	(1,32,000)
(वर्ष : 1 : 1000 इकाई : वर्ष 2: 1500 इकाई)		
(उत्पादन की लागत × समापन स्टॉक / उत्पादित इकाइयों)		
बेचे गए माल की कीमत	5,00,000	7,48,000
(+) बिक्री व्यय – परिवर्तनीय (बिक्री इकाई × ₹ 4)	20,000	34,000
(+) बिक्री व्यय – निश्चित (12000 इकाई × ₹ 1)	12,000	12,000
बिक्री की लागत : (b)	5,32,000	7,94,000
लाभ (+)/हानि (-) : (a - b)	(-) 52,000	(+) 22,000

कार्यशील नोट्स (Working Notes) :

विवरण	वर्ष 1 (₹)	वर्ष 2 (₹)
वर्ष के दौरान खपत की माल,	2,40,000	3,60,000
(+) समापन स्टॉक (2.25 महीने की औसत खपत)	45,000	67,500
	2,85,000	4,27,500
(-) प्रारम्भिक स्टॉक	—	45,000
वर्ष के दौरान खरीद	2,85,000	3,82,500
प्रतिमाह औसत खरीद (लेनदार)	23,750	31,875

2. व्यय के लिए लेनदार :

विवरण	वर्ष 1	वर्ष 2
प्रत्यक्ष मजदूरी एवं परिवर्तनीय व्यय	1,20,000	1,80,000
निश्चित विनिर्माण व्यय	72,000	72,000
निश्चित प्रशासनिक व्यय	48,000	48,000
बिक्री व्यय (परिवर्तनीय + निश्चित)	32,000	46,000
कुल	2,72,000	3,46,000
औसत प्रतिमाह	22,667	28,833

(ii) कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं का अनुमानित विवरण :

विवरण	वर्ष 1	वर्ष 2
वर्तमान सम्पत्ति:		
इंवेन्ट्री :		
(-) माल का स्टॉक	45,000	67,500
(2.25 महीने की औसत खपत)		
- तैयार माल	1,00,000	1,32,000
देनदार (1 महीने की औसत बिक्री)	40,000	68,000
रोकड़	10,000	10,000
कुल वर्तमान सम्पत्ति / सकल कार्यशील पूँजी (a)	1,95,000	2,77,500
वर्तमान दायित्व:		
माल की आपूर्ति के लिए देनदार	23,750	31,875
(कार्यशील नोट 1 देखें)		
(व्यय के लिए लेनदार)	22,667	28,833
(कार्यशील नोट 2 देखें)		
कुल वर्तमान दायित्व : (B)	46,417	60,708
अनुमानित कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं : (a - b)	1,48,583	2,16,792

कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं का अनुमानित विवरण (नकद लागत आधार पर)

विवरण	वर्ष 1 (₹)	वर्ष 2 (₹)
(A) वर्तमान सम्पत्ति		
इंवेन्ट्री		
– कच्चे माल का स्टॉक		
(6,000 इकाई × ₹ 40 × 2.25/12)	45,000	67,500
(9,000 इकाई × ₹ 40 × 2.25/12)		
– तैयार माल (कार्य नोट 3 देखें)	80,000	1,11,000
प्रतियाँ (देनदार) (कार्य नोट 4 देखें)	36,000	56,250
न्यूनतम नकद शेष	10,000	10,000
कुल वर्तमान सम्पत्ति / सकल कार्यशील पूँजी (a)	1,71,000	2,44,750
(B) वर्तमान दायित्व		
कच्चे माल के लिए लेनदार (कार्य नोट 1 देखें)	23,750	31,875
व्ययों के लिए लेनदार (कार्य नोट 2 देखें)	22,667	28,833
कुल वर्तमान दायित्व	46,417	60,708
शुद्ध कार्यशील पूँजी (A – B)	1,24,583	1,84,042

कार्यशील नोट :

3. उत्पादन की नकद लागत

विवरण	वर्ष 1 (₹)	वर्ष 2 (₹)
P & L के अनुमानित विवरण के अनुसार उत्पादन की लागत	6,00,000	7,80,000
(-) ह्रास	1,20,000	1,20,000
उत्पादन की नकद लागत	4,80,000	6,60,000
(-) औसत लागत पर प्रारम्भिक स्टॉक	80,000
बिक्री के लिए उपलब्ध माल की नकद लागत	4,80,000	7,40,000
(-) औसत लागत पर समापन स्टॉक		
$\left(\frac{₹ 4,80,000 \times 1,000}{6,000} \right); \left(\frac{₹ 7,40,000 \times 1,500}{10,000} \right)$	(80,000)	(1,11,000)
माल की नकद लागत बेची गई	4,00,000	6,29,000

4. प्राप्तियाँ (देनदार)

विवरण	वर्ष 1 (₹)	वर्ष 2 (₹)
माल की नकद लागत बेची गई	4,00,000	6,29,000

(+) परिवर्तनीय व्यय @ ₹ 4	20,000	34,000
(+) कुल निश्चित बिक्री व्यय (12,000 इकाई × ₹ 1)	12,000	12,000
देनदार की नकद लागत	4,32,000	6,75,000
औसत देनदार	36,000	56,250

3. कार्यशील पूँजी आवश्यकताओं की गणना

विवरण	वर्ष 1 (₹)	वर्ष 2 (₹)
(a) वर्तमान सम्पत्ति		
इंवेन्ट्री		
– कच्चा माल स्टॉक (कार्य नोट 3 देखें)	6,64,615	
– कच्चा प्रगति स्टॉक (कार्य नोट 2 देखें)	5,00,000	
– तैयार माल स्टॉक (कार्य नोट 4 देखें)	13,60,000	
प्राप्तियाँ (देनदार) (कार्य नोट 5 देखें)	25,40,769	
नकद और बैंक शेष	25,000	
सकल कार्यशील पूँजी	50,60,384	50,60,384
(b) वर्तमान दायित्व		
कच्चे माल के लिए लेनदार (कार्य नोट 6 देखें)	7,15,740	
मजदूरी के लिए लेनदार (कार्य नोट 7 देखें)	91,731	
	8,07,471	8,07,471
शुद्ध कार्यशील पूँजी (a – b)		42,52,913

कार्यशील नोट्स :

1. उत्पादन की वार्षिक लागत

	₹
आवश्यक कच्चा माल [(1,04,000 इकाई × ₹ 80) + ₹ 3,20,000]	86,40,000
प्रत्यक्ष मजदूरी [(1,04,000 इकाई × ₹ 30) + ₹ 60,000]	31,80,000
ओवरहेड्स (ह्रास से अनन्य) [(1,04,000 × ₹ 60 + ₹ 1,20,000)]	63,60,000
	1,81,80,000
(-) समापन W.I.P.	(5,00,000)
उत्पादित माल की लागत	1,76,80,000
(-) तैयार माल का समापन स्टॉक (₹ 1,76,80,000 × 8,000/1,04,000)	(13,60,000)
बिक्री की कुल नकद लागत	1,63,20,000

2. प्रगति कार्य स्टॉक

	₹
आवश्यक कच्चा माल (4,000 इकाई × ₹ 80)	3,20,000
प्रत्यक्ष मजदूरी (50% × 4,000 इकाई × ₹ 30)	60,000
ओवरहेड्स (50% × 4,000 इकाई × ₹ 60)	1,20,000
	5,00,000

3. कच्चा माल स्टॉक

यह दिया जाता है कि स्टॉक में कच्चा माल औसत 4 सप्ताह की खपत है। चूंकि कम्पनी नवगठित है, उत्पादन के लिए कच्चे माल की आवश्यकता और कार्य प्रगति पर वर्ष के दौरान जारी और खपत हो जायेगा।

इसलिए, वर्ष (52 सप्ताह) के लिए कच्चे माल की खपत निम्नानुसार है :

	(₹)
तैयार माल के लिए (1,04,000 × ₹ 80)	83,20,000
कार्य प्रगति के लिए (4,000 × ₹ 80)	3,20,000
	86,40,000

कच्चा माल स्टॉक $\frac{₹ 86,40,000}{52 \text{ सप्ताह}} \times 4 \text{ सप्ताह}$ यानि ₹ 6,64,615

4. तैयार माल स्टॉक : 8,000 इकाई @ ₹ 170 प्रति इकाई = ₹ 13,60,000

5. बिक्री के लिए देनदार : $1,63,20,000 \times \frac{8}{52} = ₹ 25,10,769$

6. कच्चे माल के लिए लेनदार :

खपत माल (₹ 83,20,000 + ₹ 3,20,000)	₹ 86,40,000
(+) कच्चे माल का समापन स्टॉक	₹ 6,64,615
आपूर्तिकर्ताओं द्वारा स्वीकृत क्रेडिट	₹ 93,04,615

= $\frac{₹ 93,04,615}{52 \text{ सप्ताह}} \times 4 \text{ सप्ताह} = ₹ 7,15,740$

7. मजदूरी के लिए लेनदार

$$\begin{aligned} \text{बकाया वेतन भुगतान} &= \frac{₹ 31,80,000}{52 \text{ सप्ताह}} \times 1.5 \text{ सप्ताह} \\ &= ₹ 91,731 \end{aligned}$$

4. कार्य :

1. बिक्री प्राप्तियाँ

महीने	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
बिक्री पूर्वानुमान (s)	1,000 (₹)	1,000 (₹)	1,000 (₹)	1,250 (₹)	1,500 (₹)	2,000 (₹)	1,900 (₹)	2,200 (₹)
S × 15	15,000	15,000	15,000	18,750	22,500	30,000	28,500	33,000
देनदार भुगतान :								
1 महीना 40%		6,000	6,000	6,000	7,500	9,000	12,000	11,400
2 महीना 60%		—	9,000	9,000	9,000	11,250	13,500	18,000
	—	—	15,000	15,000	16,500	20,250	25,500	29,400

2. माल के लिए भुगतान – किताबी बिक्री से दो महीने पहले की गई

महीने	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
बिक्री पूर्वानुमान (Q)	1,000 (₹)	1,250 (₹)	1,500 (₹)	2,000 (₹)	1,900 (₹)	2,200 (₹)	2,200 (₹)	2,300 (₹)
माल (Q × 5)	5,000	6,250	7,500	10,000	9,500	11,000	11,000	11,500
भुगतान (2 महीने बाद)	—	—	5,000	6,250	7,500	10,000	9,500	11,000

3. परिवर्तनीय ओवरहेड्स

महीने	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
बिक्री पूर्वानुमान (Q)	1,000 (₹)	1,250 (₹)	1,500 (₹)	2,000 (₹)	1,900 (₹)	2,200 (₹)	2,200 (₹)	2,300 (₹)
परि. ओवरहेड्स (Q×2)	2,000	2,500	3,000	4,000	3,800			
परि ओवरहेड्स (!×2.50)						5,500	5,500	5,750
एक महीने बाद भुगतान		2,000	2,500	3,000	4,000	3,800	5,500	5,500

4. मजदूरी भुगतान

महीने	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
बिक्री पूर्वानुमान (Q)	1,250 (₹)	1,500 (₹)	2,000 (₹)	1,900 (₹)	2,200 (₹)	2,200 (₹)	2,300 (₹)
मजदूरी (Q × 4)	5,000	6,000	8,000				
(मजदूरी) (Q × 4.50)				8,550	9,900	9,900	10,350
इस महीने 75%	3,750	4,500	6,000	6,412	7,425	7,425	77,62
इस महीने 25%		1,250	1,500	2,000	2,137	2,475	2,475
		5,750	7,500	8,412	9,562	9,900	10,337

नकद बजट—छह महीने की समाप्ति के बाद

	जनवरी (₹)	फरवरी (₹)	मार्च (₹)	अप्रैल (₹)	मई (₹)	जून (₹)
प्राप्तियाँ :						
उधार बिक्री	15,000	15,000	16,500	20,250	25,500	29,400
परिसर निपटान	—	—	—	—	25,000	—
	15,000	15,000	16,500	20,250	50,500	29,400
भुगतान :						
सामग्री	5,000	6,250	7,500	10,000	9,500	11,000
परिवर्तनीय ओवरहेड्स	2,500	3,000	4,000	3,800	5,500	5,500
मजदूरी	5,750	7,500	8,412	9,562	9,900	10,237
निश्चित सम्पत्ति	—	—	—	—	10,000	—
निगम कर	—	—	10,000	—	—	—
	13,250	16,750	29,912	23,362	34,900	26,737
शु(नकदी प्रवाह	1,750	(1,750)	(13,412)	(3,112)	15,600	2,663
शेष b/f	1,500	3,250	1,500	(11,912)	(15,024)	576
	3,250	1,500	(11,912)	(15,024)	576	3,239

5. नकद बजट

	जनवरी (₹)	फरवरी (₹)	मार्च (₹)	अप्रैल (₹)	मई (₹)	जून (₹)	कुल (₹)
प्राप्तियाँ							
नकद बिक्री	36,000	48,500	43,000	44,300	51,250	54,350	2,77,400
देनदारों के लिए संग्रह	—	36,000	48,500	43,000	44,300	51,250	2,23,050
बैंक ऋण	—	—	—	—	30,000	—	30,000
कुल	36,000	84,500	91,500	87,300	1,25,550	1,05,600	5,30,450
भुगतान :							
सामग्री	—	25,000	31,000	25,500	30,600	37,000	1,49,100
वेतन और मजदूरी	10,000	12,100	10,600	25,000	22,000	23,000	1,02,700
उत्पादन ओवरहेड्स	—	6,000	6,300	6,000	6,500	8,000	32,800
कार्यालय और बिक्री ओवरहेड	—	5,500	6,700	7,500	8,900	11,000	39,600

बिक्री कमीशन	2,160	2,910	2,580	2,658	3,075	3,261	16,644
पूँजी व्यय	—	8,000	—	25,000	—	—	33,000
लाभांश	—	—	—	—	35,000	35,000	
कुल	12,160	59,510	57,180	91,658	71,075	1,17,261	4,08,844
शुद्ध नकदी प्रवाह	23,840	24,990	34,320	(4,358)	54,475	(11,661)	1,21,606
शेष,	72,500	96,340	1,21,330	1,55,650	1,51,292	20,5,767	1,94,106
शेष,	96,340	1,21,330	1,55,650	1,51,292	2,05,767	1,94,106	3,15,712

6. (a) नकद बजट (हजारों में)

	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
	(₹)	(₹)	(₹)	(₹)	(₹)	(₹)
बिक्री	500	600	600	1000	650	750
संग्रह, वर्तमान मासिक बिक्री			120	200	130	
संग्रह, पिछले महीने की बिक्री			420	420	700	
संग्रह, पिछले 2 महीने की बिक्री			50	60	60	
कुल नकद प्राप्ति			590	680	890	
खरीदी		360	600	390	450	
खरीदी के लिए भुगतान			360	600	390	
मजदूरी लागत			150	200	160	
अन्य व्यय			100	100	100	
कुल नकद भुगतान			610	900	650	
प्राप्तियाँ भुगतान			(20)	(220)	240	

(b)

	जनवरी	फरवरी	मार्च
	(₹)	(₹)	(₹)
अतिरिक्त उधार	20	220	(240)
संचयी उधार	420	640	400

खरीद के लिए भुगतान करने की आवश्यकता के कारण फरवरी में वित्तपोषण की चोटियों की मात्रा पिछले महीने और उच्च श्रम लागत को बढ़ा दिया गया था। मार्च में, संग्रहों पर पर्याप्त संग्रह किए जाते हैं पहले महीने के बिलों पर बनाये जाते हैं, जिससे बड़े नकदी प्रवाह में अतिरिक्त उधार का भुगतान करने के लिए पर्याप्त होता है।

(c) प्रारूप तुलन पत्र 31 मार्च 20X9

साम्य और दायित्व	(₹)	सम्पत्तियाँ	(₹)
साम्य अंश पूँजी	100	शुद्ध स्थायी सम्पत्ति	18.36
प्रतिधारित आय	1,529	वस्तुएं	635
दीर्घ कालीन ऋण	450	लेखा अभिग्राह्य	620
लेखा देय	450	नकद तथा बैंक	50
बैंक से ऋण	400		
अन्य दायित्व	212		
	3,141		3,141

लेखा अधिग्राह्य = मार्च में बिक्री × 0.8 + फरवरी में बिक्री × 0.1

वस्तुएं = ₹ 545 + जनवरी से मार्च तक कुल खरीद – जनवरी से मार्च तक कुल बिक्री × 0.6

लेखा देय = मार्च में खरीद

प्रतिधारित आय = ₹ 1,439 + बिक्री – खरीद का भुगतान – मजदूरी लागत तथा और – अन्य व्यय, सभी मार्च के माध्यम से जनवरी

7. वैकल्पिक संग्रह कार्यक्रमों का मूल्यांकन

	वर्तमान नीति (₹)	विकल्प I (₹)	विकल्प II (₹)
बिक्री राजस्व	30,00,000	30,00,000	30,00,000
औसत वसूली अवधि (ACP) (दिन)	50	40	30
प्राप्तिया (₹) $\left(\text{बिक्री} \times \frac{\text{ACP}}{360} \right)$	4,16,667	3,33,333	2,50,000
वर्तमान स्तर से प्राप्य में कमी (₹)	—	83,334	1,66,667
ब्याज में बचत @ 10% प्रति वर्ष (a)	—	₹ 8,333	₹ 16,667
खराब ऋण हानि का %	5%	4%	3%
राशि (₹)	1,50,000	1,20,000	90,000
वर्तमान स्तर से खराब ऋणों में कमी (b)	—	30,000	60,000
वर्तमान स्तर में वृद्धिशील			
लाभ (c) = (a) + (b)	—	38,333	76,667
संग्रहण व्यय (₹)	30,000	60,000	95,000

वर्तमान स्तर से वृद्धिशील संग्रह व्यय (d)	—	30,000	65,000
वृद्धिशील शुद्ध लाभ (c) – (d)	—	₹ 8,333	₹ 11,667

निष्कर्ष : विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि विकल्प I को ₹ 8,333 का लाभ होता है और विकल्प II को वर्तमान स्तर पर ₹ 11,667 का लाभ होता है। विकल्प II का विकल्प I से ₹ 3,334 अधिक का लाभ होता है। इसलिए विकल्प II अधिक व्यवहार्य है।

(नोट : बिक्री की लागत के अभाव में, प्राप्तियों में निवेश की गणना के उद्देश्य के लिए बिक्री की गई है। साल = 360 दिन)

8. प्रस्ताव का मूल्यांकन दर्शाते विवरण

विवरण	(₹)
(a) अनुमानित लाभ :	
शुद्ध बिक्री	1,00,000
(-) उत्पादन और बिक्री व्यय @ 80%	(80,000)
खराब ऋण के लिए प्रदान करने से पहले लाभ	20,000
(-) खराब ऋण @ 10%	(10,000)
कर से पहले लाभ	10,000
(-) कर @ 50%	(5,000)
कर से बाद लाभ	5,000
(b) प्राप्तियों में निवेश की अवसर लागत	(2,500)
(c) शुद्ध लाभ (a-b)	2,500

सलाह : बिक्री प्रबन्धक के प्रस्ताव को स्वीकार किया जाना चाहिए।

कार्यशील नोट : धन की अवसर लागत की गणना

अवसर लागत

$$= \text{उधार बिक्री की कुल लागत} \times \frac{\text{संग्रहण अवधि}}{12} \times \frac{\text{वापसी की आपेक्षित दर}}{100}$$

$$= ₹ 80,000 \times \frac{1.5}{12} \times \frac{25}{100} = ₹ 2,500$$

बिना भुगतान के जोखिम का स्वीकार्य डिग्री को दर्शाता विवरण

विवरण	वापसी की अपेक्षित दर		
	30%	40%	60%
बिक्री	1,00,000	1,00,000	1,00,000
(-) उत्पादन और बिक्री व्यय	80,000	80,000	80,000
खराब ऋण के लिए प्रदान करने से पहले लाभ	20,000	20,000	20,000
(-) खराब ऋण ;माने X)	X	X	X
कर से पहले लाभ	20,000 – X	20,000 – X	20,000 – X
(-) कर @ 50%	(20,000 – X) 0.5	(20,000 – X) 0.5	(20,000 – X) 0.5
कर के बाद लाभ	10,000 – 0.5 X	10,000 – 0.5 X	10,000 – 0.5 X
आपेक्षित वापसी	10,000* का 30%	10,000* का 40%	10,000* का 60%
	= ₹ 3,000	₹ 4,000	₹ 6,000

$$* \text{औसत देनदार} = \text{उधार बिक्री की कुल लागत} \times \frac{\text{संग्रह अवधि}}{12}$$

$$= ₹ 80,000 \times \frac{1.5}{12} = ₹ 10,000$$

मान की गणना और प्रत्येक मामले में X की प्रतिशतता निम्नानुसार है :

मामला I $10,000 - 0.5 X = 3,000$
 $0.5 X = 7,000$
 $X = 7,000 / 0.5 = ₹ 14,000$
 $= ₹ 14,000 / ₹ 1,00,000 \times 100 = 14\%$

मामला II $10,000 - 0.5 X = 4,000$
 $0.5 X = 6,000$
 $X = 6,000 / 0.5 = ₹ 12,000$
 $= ₹ 12,000 / ₹ 1,00,000 \times 100 = 12\%$

बिक्री का % के रूप में खराब ऋण = 12%

मामला III $10,000 - 0.5 X = 6,000$
 $0.5 X = 4,000$
 $X = 4,000 / 0.5 = ₹ 8,000$

बिक्री का % के रूप में खराब ऋण = ₹ 8,000 / ₹ 1,00,000 × 100 = 8%

अतः यह पाया जाता है कि बिना भुगतान के जोखिम का स्वीकार्य डिग्री 14%, 12% और 8% है यदि अपेक्षित दर (कर के बाद) 30%, 40% और 60% क्रमशः है।

9. देनदार नीतियों के मूल्यांकन को दर्शाते विवरण

विवरण	प्रस्तावित नीति (₹)
(a) अनुमानित लाभ :	
(a) उधार बिक्री	15,00,000
(b) कुल लागत	
(i) परिवर्तनीय लागत	14,50,000
(ii) आवर्ती लागत	5,000
	14,55,000
(c) खराब ऋण	15,000
(b) अनुमानित लाभ [(a) – (b) – (c)]	30,000
(B) प्राप्तियों में निवेश की अवसर लागत	68,787
(C) शुद्ध लाभ (a – b)	(38,787)

अनुशांसा : प्रस्तावित नीति को अपनाया नहीं जाना चाहिए क्योंकि इस नीति के शुद्ध लाभ नकारात्मक हैं।

कार्यशील नोट : औसत निवेश की अवसर लागत की गणना

$$\text{अवसर लागत} = \text{कुल लागत} \times \frac{\text{संग्रहण अवधि}}{365} \times \frac{\text{वापसी की दर}}{100}$$

विवरण	15%	34%	30%	20%	कुल
(A) कुल लागत	2,18,250	4,94,700	4,36,500	2,91,000	14,40,450
(B) संग्रहण अवधि	30 / 365	60 / 365	90 / 365	100 / 365	
(C) वापसी की अपेक्षित दर	24%	24%	24%	24%	
(D) अवसर लागत	4,305	19,517	25,831	19,134	68,787
(A × B × C)					

□□